Musical Instruments of Wandering Minstrels

India boasts of an ancient and rich musical tradition. A study of musical texts, paintings and sculptures from prehistoric times to the present day would reveal the continuity of the musical traditions of India. Musical instruments appear in the drawings and paintings (dating back to the Mesolithic era) of Bhimbetka rock shelters which is a World Heritage Site. Evidence of dance and music has been found in the excavations of the Harappan Civilization too.

Music combines vocal or instrumental sounds for emotional expression. Musical instruments represent music in a tangible form. A study of musical instruments helps in tracing the evolution of music and also explains many aspects of the culture of the group of people using these instruments. In the *Natya Shastra*, compiled by Bharata Muni, musical instruments have been divided into four main categories on the basis of how sound is produced: (i) The *Tata Vadya* or Chordophones - Stringed instruments; (ii) The *Sushira Vadya* or Aerophones -Wind instruments; (iii) The *Avanaddha Vadya* or Membranophones – Percussion instruments; and (iv) The *Ghana Vadya* or Idiophones - Solid instruments which do not require tuning.

Wandering minstrels are performers who travel from place to place performing musical acts. They have been an integral part of musical traditions of India. They composed songs to glorify their patrons and legendary heroes and inspired many dramatists of the classical Sanskrit theatre to write dramas. The charm of wandering minstrels lies in their songs and music. These wandering minstrels singing and playing on roads and streets in villages and towns at festive occasions, private as well as public, have always been a common sight in India. The soothing effect of the songs of wandering minstrels and the music mingled with their emotions and thoughts complement the force of love and goodwill directed towards the people. Beyond their functional utility, musical instruments used by wandering minstrels are aesthetically pleasing and capture the local cultural elements of various regions of India.

Kamaicha belonging to the chordophone category is a bowed instrument with a big bowl shaped skin covered resonator, a rectangular finger board and a round peg box. Three main gut strings and eight drone steel strings are attached to a metal hook, passed over the bridge and tied to the pegs. It is played with a bow made of *Shisham* wood and horse hair. It is used by the *Manganiar* community of West Rajasthan as a popular accompaniment to their songs.

Ravanahatha, also of the chordophone category, comprises a resonator made of coconut shell and a long bamboo finger board fixed to it. The main playing string is made of horse hair whereas another playing string and 16 sympathetic strings are made of steel. It is played with a bow made of curved wooden stick and horse hair. It is used for vocal accompaniment by *Bhopas* of Rajasthan in a traditional narrative form called *Pabuji Ki Phad*.

Surando is an ancient folk musical instrument of the chordophone category traditionally used by the *Fakirani Jat* community of Kutch. It is a stringed musical instrument played with the use of a bow called Gaz or Gazi in the local dialect. The body of the instrument is preferably made of a single piece of lahirro wood to create the most precise shape and perfect melody. The bow comprises strings of horse's hair or gut fastened to each of a flexible stick. The bow is placed on the strings at right angles to it and is moved back and forth across it.

Algoza belonging to the aerophone category, comprises a set of two equal sized bamboo, beaked flutes with five finger holes and a fipple hole on each flute. Both the flutes are blown simultaneously by the player. It is used by the *Meo* community of Alwar, Rajasthan as an accompaniment to their folk and tribal songs.

Burrakatha is an oral storytelling technique in the *Jangam Katha* tradition, performed in villages of Andhra Pradesh and Telangana. *Burrakatha Dakki* is a pitcher shaped brass vessel with a short neck and a round belly. It belongs to the membranophone category. The wider end is covered with skin with the help of a cotton cord through hoops and an iron ring. It is suspended from the neck and played by palms by *Burrakatha* balladeers.

Ektara comprises a cylindrical wooden resonator with base covered with skin, attached to a split bamboo and a single steel string plucked rhythmically by the index finger. It belongs to the chordophone category. The split bamboo is manipulated to produce variations in tone. It is a common instrument in *Baul* music from Bengal and used by *Bauls* and mendicants of Odisha and neighboring regions as a drone instrument.

Department of Posts is pleased to issue six pairs of se-tenant Commemorative Postage Stamps on Musical Instruments of Wandering Minstrels.

Credits:

Stamps/ FDC/ Brochure/
Cancellation Cachet : Shri Sankha Samanta
Text : Based on information available on the internet
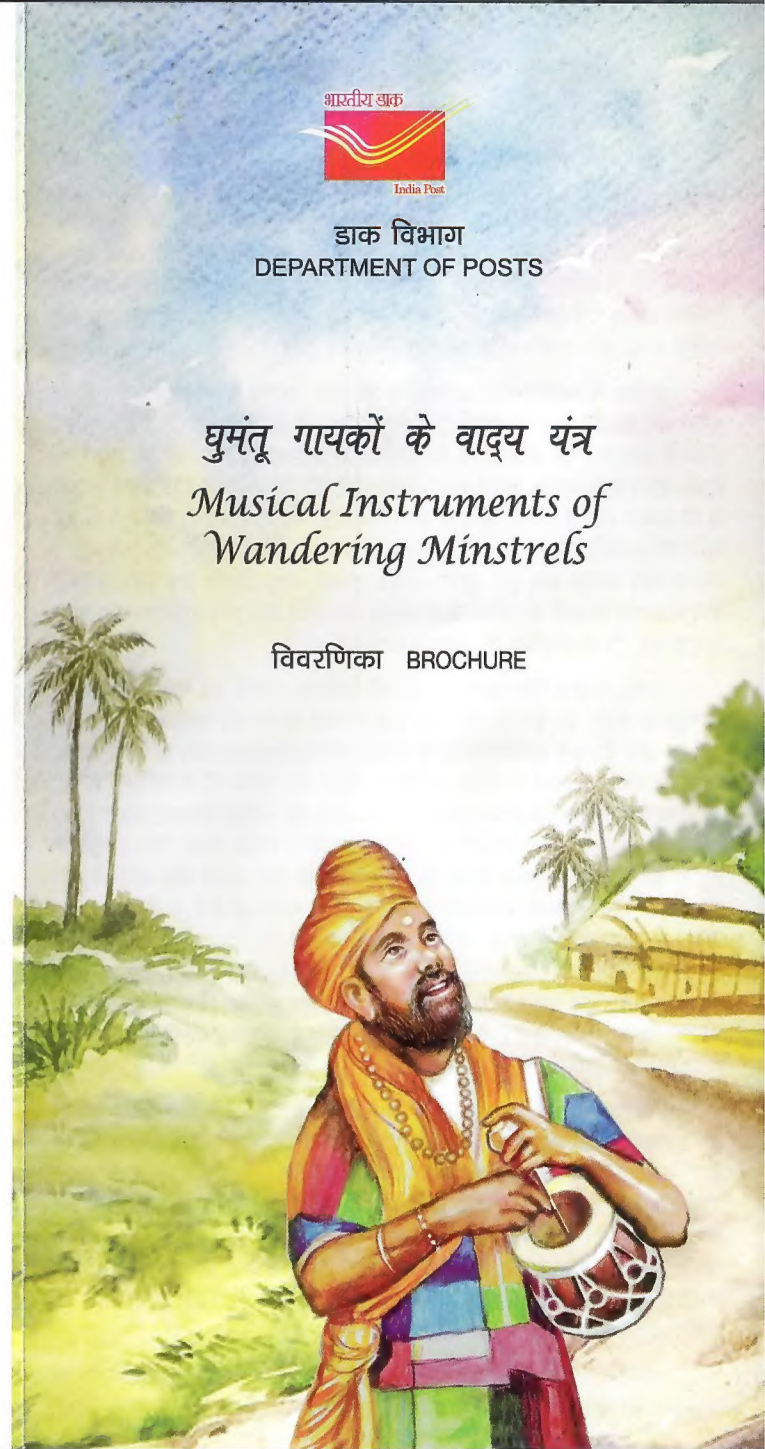
घुमंतू गायकों के वाद्य यंत्र

भारत की गौरवशाली संगीत परंपरा अत्यंत प्राचीन एवं समृद्ध है। प्रागैतिहासिक काल से आधुनिक समय तक के संगीत संबंधी ग्रंथों, चित्रकलाओं और मूर्तिकला के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारत में सांगीतिक परम्पराओं की धारा अविरल बहती है। वाद्य यंत्रों के चित्र, विश्व धरोहर स्थल के रूप में विख्यात भीमबेटका की गुफाओं (शैल आश्रय) की चित्रकारियों (जोकि मध्यपाषण युग की हैं) में भी देखे जा सकते हैं। हड़प्पा सभ्यता की खुदाई में भी नृत्य तथा संगीत परम्परा के प्रमाण प्राप्त हुए हैं।

संगीत में भावनात्मक अभिव्यक्ति के लिए गायन एवं वाद्य ध्वनियों के संगम को माध्यम बनाया जाता है। वाद्य यंत्र, संगीत का मूर्त रूप हैं। वाद्य यंत्रों के अध्ययन की प्रक्रिया में हम संगीत के उद्भव से अब तक के सफर के साथ–साथ इन्हें प्रयोग करने वाले जनसमूहों की संस्कृति के विभिन्न पहलूओं से भी रूबरू होते हैं। भरत मुनि के द्वारा संकलित *नाट्यशास्त्र* में वाद्य यंत्रों को ध्वनि की उत्पत्ति के आधार पर 4 प्रमुख श्रेणियों में बांटा गया है:–(i) *तंत् वाद्य* अथवा तार वाद्य यंत्र (ii) *सुषिर वाद्य* अथवा वायु वाद्य यंत्र (iii) *अवनद्ध वाद्य* अथवा झिल्ली के कंपन वाले वाद्य यंत्र तथा (iv) *घन वाद्य* अथवा ठोस वाद्य यंत्र, जिन्हें ट्यूनिंग की आवश्यकता नहीं होती।

घुमंतू गायक ऐसे कलाकार हैं, जो विभिन्न स्थानों पर घूमते हुए अपनी सांगीतिक कला का प्रदर्शन करते हैं। ये गायक भारत की संगीत परम्परा का अभिन्न अंग हैं। इन कलाकारों ने न केवल अपने आश्रयदाताओं के साथ–साथ महान नायकों की शान में विविध प्रकार के गीतों की रचना की है, बल्कि संस्कृत की शास्त्रीय नाट्य विधा के अनेक नाटककारों को नाट्य रचनाएं लिखने की प्रेरणा भी दी है। घुमंतू गायकों का मुख्य आकर्षण उनके गीतों और संगीत में बसता है। पर्वों और त्यौहारों के अवसर पर गांवों एवं शहरों की गलियों और सड़कों से लेकर निजी समारोहों अथवा मेलों में गाते–बजाते ये घुमंतू गायक भारत में आम रूप से देखे जाते हैं। इनके मनमोहक गीत और भावनाओं से ओत–प्रोत इनका संगीत, जनसामान्य के प्रति इन गायकों के प्रेम और सद्भाव का प्रतीक है। इन घुमंतू गायकों के वाद्य यंत्र व्यावहारिक होने के साथ–साथ अत्यंत खूबसूरत होते हैं। ये वाद्य यंत्र भारत के विभिन्न क्षेत्रों की स्थानीय संस्कृति का प्रतिबिम्ब हैं।

कमायचा, धनुर्वाद्य श्रेणी का तंत् वाद्य यंत्र है। बड़े कटोरे के आकार की इसकी तबली, चमड़े से ढकी होती है। साथ ही, इसमें आयताकार फिंगर बोर्ड तथा गोलाकार खूंटियां (पेग बॉक्स) होती हैं। इसकी तीन मुख्य तारें, पशुओं की आंत से तैयार होती हैं। साथ ही स्टील की, धातु के हुक से जुड़ी, आठ अन्य तारें ब्रिज के ऊपर से चढ़ाकर खूंटियों से बंधी होती हैं। इस वाद्य यंत्र को *शीशम* की लकड़ी तथा घोड़े के बाल से बनी चाप की मदद से बजाया जाता है। पश्चिमी राजस्थान के *मांगणियार* समुदाय के लोग इस वाद्य यंत्र का प्रयोग अपने लोक गीतों को गाते समय करते हैं।

रावणहत्था भी एक प्रकार का तंत् वाद्य यंत्र है, जिसकी तबली पर नारियल का खोल मढ़ा होता है और इसके साथ बांस से बना एक लंबा फिंगर बोर्ड जुड़ा होता है। इसकी मुख्य तार, घोड़े के बाल की तथा अन्य तारें एवं 16 सहायक तारें स्टील की बनी होती हैं। इसे लकड़ी की बनी घुमावदार चाप (स्टिक) तथा घोड़े के बाल से बनी चाप से बजाया जाता है। इस वाद्य यंत्र का इस्तेमाल, राजस्थान के *भोपा* समुदाय के लोग *पाबूजी की फड़* नामक पारंपरिक कथा वर्णन शैली में अपने गायन के दौरान करते हैं।

सुरान्दो, तंत् (तार) वाद्य श्रेणी का प्राचीन वाद्य यंत्र है, जिसका इस्तेमाल *कच्छ के फकीरनी जाट* समुदाय के लोग अपने पारंपरिक लोकगायन के दौरान करते हैं। इस तार वाद्य यंत्र को चाप, कमान की मदद से बजाया जाता है, जिसे स्थानीय भाषा में गज या गजी कहते हैं। यह पूरा वाद्य यंत्र लाहिरो लकड़ी के एक ही टुकड़े से पूरी बारीकी के साथ इस प्रकार तैयार किया जाता है कि इसके आकार में कोई नुक्स (खामी) न रहे और इससे निकलने वाली धुन की मधुरता कायम रहे। इसकी चाप, किसी लोचदार लकड़ी पर घोड़े के बाल या आंतों से तैयार तार बांध कर बनाई जाती है। इस चाप को, इस वाद्य यंत्र की तारों पर सीधा रखकर आगे–पीछे चलाते हुए बजाया जाता है।

अलगोजा वायु वाद्य यंत्र श्रेणी का वाद्य यंत्र है, जिसमें दो समान आकार की बांसुरियां होती हैं। इनमें प्रत्येक बांसुरी पर अंगुलियों के लिए 5 छिद्र और फूंकने के लिए एक छिद्र बना होता है। इन दोनों बांसुरियों को एक साथ बजाया जाता है। इस वाद्य यंत्र का इस्तेमाल अलवर, राजस्थान के *मेव* समुदाय के लोग अपने लोक और जनजातीय गीतों को गाने के दौरान करते हैं।

बुर्राकथा, जंगमकथा परम्परा में एक कथावाचन की शैली है, जिसका प्रदर्शन आंध्र प्रदेश और तेलंगाना के गांवों में किया जाता है। *बुर्राकथा डक्की,* पीतल के घड़े के आकार का वाद्य यंत्र है, जिसकी गर्दन छोटी और पेट गोलाकार होता है। यह वाद्य यंत्र, कंपन वाद्य यंत्र श्रेणी का है। इसके चौड़े हिस्से पर सूत के धागे की मदद से कुण्डों और लोहे के छल्ले के माध्यम से चमड़े की परत चढ़ाई जाती है। *बुर्राकथा* वाचक, इस वाद्य यंत्र को गले में टांग कर हथेली से बजाते हैं।

इकतारा, लकड़ी का बना बेलनाकार वाद्य यंत्र है, जिसकी धुनें गूंज पैदा करती हैं। इकतारा के तूबे पर चमड़ा मढ़ा जाता है और इस हिस्से को बांस के टुकड़े से जोड़ दिया जाता है। इस पर स्टील की तार होती है, जिसे तर्जनी की मदद से बजाया जाता है। यह वाद्य यंत्र तंत् वाद्य यंत्र श्रेणी का है। इकतारे के बांस के कारण ही विविध प्रकार की मधुर धुनें पैदा होती हैं। यह वाद्य यंत्र बंगाल के *बाउल* संगीत का अभिन्न अंग है और *बाउल* समुदाय के लोगों तथा उड़ीसा और आस–पास के क्षेत्रों में भिक्षुक वर्ग का प्रिय वाद्य यंत्र है।

डाक विभाग, 'घुमंतू गायकों के वाद्य यंत्र' विषय पर छः से–टेनेंट स्मारक डाक–टिकटों का सेट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार

डाक–टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका / विरूपण कैशे	: श्री शंखा सामंता
पाठ	: इंटरनेट पे उपलब्ध सामग्री पर आधारित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसे (12)
Denomination	:	500 p (12)
मुद्रित डाक टिकटें	:	500000 प्रत्येक
Stamps Printed	:	500000 each
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य ₹ 5.00